B.A. I Hindi Hons.

प्राध्यापक- डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एम०एम० कॉलेज, जहानाबाद

मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मोहन राकेश का जन्म

8 जनवरी 1925 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। इनके पिता का नाम करमचन्द गुगलानी था जो पेशे से वकील थे किन्तु साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से इनका गहरा जुड़ाव था। इनकी साहित्यिक अभिरुचि का असर पुत्र मोहन राकेश पर भी पड़ा। मोहन राकेश का बचपन का नाम मदन मोहन गुगलानी था। इन्होंने लाहौर से संस्कृत भाषा एवं साहित्य में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। पुनः जालंधर से हिन्दी विषय में एम०ए० किया। इसके बाद इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य किया बाद में बम्बई के एलफिंस्टन कॉलेज में प्रोफेसर बने। कुछ दिनों के लिए इन्होंने जालंधर के डी०ए०वी० कॉलेज में भी पढ़ाया। इसके बाद इन्होंने हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका' का संपादन किया। इनके संपादकत्व में यह पत्रिका काफी लोकप्रिय हुयी तथा इसकी विविधता और विषय वैविध्य ने इसे हिन्दी की चर्चित पत्रिकाओं में ला खड़ा किया। आधुनिक कहानियों की दृष्टि से यह पत्रिका विशेषतः नवयुवकों और साहित्य-मनीषियों में बहुत समादृत हुयी। किन्तु मोहन राकेश ने इसे भी छोड़ दिया और स्वतंत्र लेखन में संलग्न हो गये। इन्होंने हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपने लेखन से समृद्ध किया। इंसान के खंडहर, नये बादल, जानवर और जानवर, एक और जिन्दगी, फौलाद का आकाश और वारिस शीर्षक से कहानियों का संग्रह प्रस्तुत किया।

इसी प्रकार इन्होंने अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों का भी लेखन किया। अँधेरे बंद कमरे, न आने वाला कल, और अंतराल इनके उपन्यास थे। मोहन राकेश उच्चकोटि के नाटककार थे। इन्होंने उच्चकोटि के नाटकों की रचना की थी— आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे-अधूरे, पैर तले की जमीन, अंडे के छिलके - इत्यादि। इनके अतिरिक्त इन्होंने यात्रावृत्त एवं अनेक विचारपरक निबंधों का भी लेखन किया।

मोहन राकेश नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार थे। वे आधुनिक युग विशेषकर और आधुनिक युग के प्रधान कथाकार एवं नाटककार थे। इनकी कहानियाँ न केवल विशिष्ट है वरन परम्परा से अलग भी है। इनकी कहानियों के विषय समाज की ज्वलन्त समस्याएं होती हैं। जिसे पूर्ण विवेचना के साथ कहानी में लिखा जाता है और अंत में उसकी परिणति एक मूल्यनिष्ठ के रूप में हो जाती है। वर्णन की ईमानदारी इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है। समाज के सभी वर्गों के पात्र इनकी कहानियों में उपस्थित हैं। किन्तु उनकी स्थिति यहाँ कुछ विशिष्ट होती है।

इसी प्रकार इनके नाटक युगान्तकारी प्रभाव रखते हैं। जयशंकर प्रसाद ने हिन्दी के नाट्य साहित्य को समृद्धि प्रदान की थी किन्तु उनके बाद मोहन राकेश श्रेष्ठ प्रतिभाशाली नाटककारों में परिगणित किये जाते हैं। इनके नाट्य एवं कथा साहित्य की विशेषता है कि इनका अंत बिना किसी निष्कर्ष के होता है ठीक इसके विपरीत हिन्दी का पूर्व आधुनिक काल का साहित्य किसी निष्कर्ष पर

पहुँच कर ही समाप्त होता है। इसके अतिरिक्त पूर्व की कहानियों का अन्त प्रायः आदर्शवादी या आदर्शो-मुख हुआ करता था किन्तु मोहन राकेश के कथा या नाटक साहित्य में देखा नहीं पाया जाता लेखक कहीं से भी कृति को प्रमाणित करने का प्रयास नहीं करता वरन जो है, जैसा है, को ही प्रस्तुत कर देता है। रचना में कोई भी सत्य आरोपित नहीं करता - यही मोहन राकेश या आधुनिक नई कहानियों की विशेषता है।

मोहन राकेश का संपूर्ण जीवन साहित्य को समर्पित था। उनकी अपनी विशिष्ट दृष्टि थी, स्वाद अंदाज था जो उन्हें भीड़ से ही नहीं वरन अपने पूर्ववर्ती साहित्यकारों से अलग करता है। यह बड़े ही दुःख का विषय है कि मोहन राकेश जैसे प्रतिभावान विद्वान, श्रेष्ठ साहित्यकार दीर्घजीवी नहीं होते। इनका मात्र सैंतालीस वर्ष की आयु में ही अवसान हो गया और हिन्दी साहित्य एक विशाल संभावना से वंचित रह गया। सच में मोहन राकेश हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक प्रकाशित सितारों में से एक थे।